टिप्पणी

18

वित्तीय विवरण - II

आप सीख चुके हैं कि आय विवरण अर्थात व्यापार एवं लाभ-हानि खाता तथा स्थिति विवरण, (तुलन पत्र) दो वित्तीय विवरण हैं जिन्हें हर व्यावसायिक इकाई एक अवधि की समाप्ति पर बनाता है। आय विवरण शुद्ध लाभ अथवा शुद्ध हानि जो भी हो, को दर्शाता है जबकि स्थिति विवरण विशेष तिथि को व्यवसाय की वित्तीय स्थिति को दर्शाता है। ये विवरण तलपट तथा अन्य सूचना के आधर पर बनाए जाते है। ऐसा भी हो सकता है कि कुछ आय एवं व्यय की ऐसी मदें हैं जो उस अवधि से सम्बन्ध नहीं रखती जिसके लिए तलपट को बनाया गया है या फिर दूसरी मदें जो उपार्जित हो चुकी है लेकिन जिनका लेखा जोखा नहीं किया गया है इसलिए उन्हें तलपट में दर्शाया नहीं गया हैं। इन दोनों ही प्रकार की आय एवं व्यय का पूरी तरह से लेखा होना आवश्यक है तभी उपयुक्त दोनों विवरण व्यवसाय की सत्य एवं उचित स्थिति को दिखा पाएंगे। इन्हें समायोजन कहते हैं। इस पाठ में हम कुछ समायोजनों का लेखांकन करना सीखेंगे तथा इन समायोजनों को वित्तीय विवरणों में समाविष्ट करेंगे।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के पश्चात आप :

- लेखा समायोजन की आवश्यकता को पहचान सकेंगे;
- अन्तिम स्टॉक, अदत्त एवं पूर्वदत्त व्यय, अर्जित आय एवं आय की अग्रिम प्राप्त आय को समझा सकेंगे;
- पूँजी एवं आहरण पर ब्याज, अवक्षयण के सम्बन्धों में समायोजनों एवं अप्राप्य ऋण तथा संदिग्ध ऋणों के लिए प्रावधान को समझा सकेंगे;
- व्यापार खाता, एवं लाभ-हानि खाता तथा स्थिति विवरणों में समायोजनों को समाविष्ट कर सकेंगे।

टिप्पणी

18.1 लेखा समायोजनों की आवश्यकता

आप पहले ही समझ चुके हैं कि प्रत्येक व्यवसायिक इकाई व्यापार एवं लाभ हानि खाता तथा स्थिति विवरण, यह दो वित्तीय विवरण है जिन्हें यह एक लेखा अवधि के अन्त में, जो सामान्यतः एक वर्ष है, बनाते हैं। यह सुनिश्चित करना आवश्यक है कि वह आय एवं व्यय की मदें जो उस लेखा अवधि से सम्बन्ध नहीं रखती उन्हें सम्मिलित नहीं करना चाहिए। यदि इनमें से कुछ मदों को वित्तीय विवरणों में सम्मिलित कर लिया गया है इन्हें आवश्यक समायोजन प्रविष्टि के द्वारा हटा देना चाहिए। इसी प्रकार से कुछ मदें है जो छूट गई है लेकिन जिनको खातों में दिखाना आवश्यक है। इनकी भी समायोजन प्रविष्टि की जाएगी। सही लाभ अथवा हानि की गणना के लिए तथा व्यवसाय की सत्य एवं सही स्थिति दर्शाने के लिए यह आवश्यक है। उदाहरण के लिए माना एक फर्म अपने खाते प्रति वर्ष 31 मार्च को बंद करती है। माना इसने मार्च के महीने का दुकान के किराए का भुगतान नहीं किया है यह मद तलपट में नहीं दिखाई गई होगी। अतः इसका समायोजन आवश्यक है क्योंकि इसका सम्बन्ध उस वर्ष से है जिस वर्ष के खाते बनाए जा रहे हैं। इसी प्रकार से माना 30 जून तक का वार्षिक बीमा प्रीमियम का भुगतान कर दिया गया है। इसका अर्थ हुआ कि तीन महीने का भुगतान अग्रिम कर दिया गया है। यह राशि तलपट में दिखाई गई बीमे की राशि में सम्मिलित है। अग्रिम भुगतान राशि को इसमें से हटाना है। सम्मिलित करने अथवा हटाने की यह प्रक्रिया समायोजन कहलाती है। खाता बहियों में वित्तीय विवरण तैयार करते समय सत्य एवं सही स्थिति ज्ञात करने के लिए इनका समायोजन आवश्यक है।

पाठगत प्रश्न 18.1

उचित शब्द भरकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

i. व्यापार एवं लाभ हानि खाता ..... अथवा ..... को दर्शाता है।

ii. व्यवसाय की ..... एवं ..... को दिखाने के लिए समायोजन आवश्यक है।

iii. आय एवं व्यय की वह मदें जो लेखा अवधि से सम्बन्धित नहीं हैं को ..... ।

iv. आय एवं व्यय की वे मदें जो लेखा अवधि से संबंधित है लेकिन छूट गई है का ..... चाहिए।

18.2 समायोजन एवं उनका समावेशन

समायोजन की संख्या एवं उनकी प्रकृति अलग अलग संगठन की अलग अलग होती हैं। यह संगठन की गतिविधियों की मात्रा एवं प्रकृति पर निर्भर करती है। वैसे सभी प्रकार के संगठन

टिप्पणी

में कुछ समायोजन एक जैसे हैं। वैसे भी समायोजन करते समय आपकों द्विअंकन प्रणाली के सामान्य सिद्धान्त का पालन करना होगा अर्थात राशि को एक खाते के नाम में तथा दूसरे के जमा में लिखना होगा। अतः वित्तीय विवरणों में समायोजन की मदों को दो स्थानों पर दिखाया जायेगा एक नाम को तथा दूसरी जमा को दर्शाएगी।

आइए अब समायोजन की कुछ मदों एवं वित्तीय विवरणों में उनके लेखा जोखा का वर्णन करें। यह समायोजन की मदें निम्न हैं:

1. अन्तिम स्टॉक
2. अदत्त व्यय
3. पूर्वदत्त व्यय
4. उपार्जित आय
5. आय की अग्रिम प्राप्ति
6. पूँजी पर ब्याज
7. आहरण पर ब्याज
8. अवक्षयण
9. अतिरिक्त अप्राप्य ऋण
10. अप्राप्य एवं संदिग्ध ऋणों के लिए प्रावधान
11. देनदारों को छूट के लिए प्रावधान
12. प्रबन्धक का कमीशन
13. असामान्य हानि
14. स्वामी द्वारा माल का आहरण
15. वस्तुओं का मुफ्त नमूना वितरण

आइए इन समायोजनों को एक एक कर समझें:

1. अन्तिम स्टॉक

अन्तिम स्टॉक से अभिप्राय वर्ष के अन्त में बिना बिके हुए माल के स्टॉक से है। सामान्यतः यह तलपट में नहीं दर्शाया जाता इसीलिए इसका वित्तीय विवरणों में समावेशन कराया जाता है। यह व्यापार खाता के जमा की ओर तथा स्थिति विवरण में सम्पत्ति की ओर दिखाया जाता है।

इसकी समायोजन प्रविष्टि इस प्रकार से होगी:

अन्तिम स्टॉक खाता		नाम
	व्यापार खाता से	
(अन्तिम स्टॉक का व्यापार खाते में हस्तांन्तरण)		

टिप्पणी

वित्तीय विवरणों पर इस समायोजन प्रविष्टि का प्रभाव इस प्रकार से होगा

व्यापार खाता

नाम जमा

विवरण	*राशि (₹)*	*विवरण*	*राशि (₹)*
		अन्तिम स्टॉक	

स्थिति विवरण

देयताएं	*राशि (₹)*	*सम्पतियों*	*राशि (₹)*
		अन्तिम स्टॉक	

यदि अन्तिम स्टॉक का लेखा किया जा चुका है तो यह तलपट का भाग बन जायेगा इसलिए व्यापार खाते में इसका समायोजन करने की आवश्यकता नहीं है। समायोजित अन्तिम स्टॉक स्थिति विवरण के सम्पत्ति की ओर दिखाया जायेगा।

2. अदत्त व्यय (Outstanding Expenses)

जिन खर्चों का सम्बन्ध वर्त्तमान लेखा वर्ष से है लेकिन जिनका भुगतान नहीं किया गया है इन्हें अदत्त व्यय कहते हैं। माना कि खाते प्रति वर्ष 31 दिसम्बर को बन्द किये जाते हैं तथा दिसम्बर का वेतन देय है लेकिन उसका भुगतान नहीं किया गया है। यह अदत्त वेतन का उदाहरण है इसी प्रकार से अन्य मदें भी होती हैं जैसे कि अदत्त, किराया, अदत्त मजदूरी आदि। अदत्त वेतन की समायोजन प्रविष्टि इस प्रकार की जायेगी।

वेतन खाता नाम

अदत्त वेतन खाता से

(दिसम्बर मास का किराया अदत्त है)

वित्तीय विवरणों में इसका लेखा इस प्रकार से होगा

लाभ-हानि खाता

नाम जमा

विवरण	*राशि (₹)*	*विवरण*	*राशि (₹)*
वेतन *जमा :* अदत्त वेतन			

स्थिति विवरण

देयताएं	*राशि (₹)*	*सम्पत्तियां*	*राशि (₹)*
अदत्त वेतन			

टिप्पणी

अदत्त व्यय की राशि को उसकी भुगतान की गई राशि में जोड़ दिया जाएगा जिसे आवश्यकतानुसार व्यापार खाता अथवा लाभ-हानि खाता में दिखाया जायेगा। क्योंकि यह एक देयता की मद है इसलिए इसे 'देयताएं' की ओर लिखा जाएगा।

3. पूर्वदत्त व्यय (Prepaid Expenses)

कभी कभी किसी भुगतान किये गये व्यय के एक भाग का सम्बन्ध अगले लेखा वर्ष से हो सकता है। ऐसे व्यय को पूर्वदत्त व्यय अथवा व्यय का अग्रिम भुगतान कहते हैं। उदाहरण के लिए बीमा प्रीमियम की राशि जिसका भुगतान वर्त्तमान वर्ष में किया गया है, वर्ष समाप्ति के लिए हो सकती है, जिसकी तिथि अगले वर्ष में पड़ रही है। बीमा प्रीमियम की राशि का वह भाग जो अगले लेखा वर्ष से सम्बन्धित है, प्रीमियम का अग्रिम भुगतान कहलाता है इसे भुगतान की गई राशि में से घटा दिया जाता है तथा इसे परिसम्पत्ति के रूप में दिखाया जाता हैं इसी प्रकार की अन्य मदें हैं पूर्वदत्त किराया, पूर्वदत्त टैक्स आदि।

पूर्वदत्त बीमा प्रीमियम की समायोजन प्रविष्टियां

पूर्वदत्त बीमा प्रीमीयम खाता		नाम
	बीमा प्रीमियम खाता से	
(बीमा प्रीमियम राशि का अग्रिम भुगतान)		

वित्तीय विवरणों में इसका लेखा इस प्रकार से किया जाता है :

लाभ-हानि खाता

वर्ष की समाप्त के लिये .....

नाम जमा

विवरण	*राशि (₹)*	*विवरण*	*राशि (₹)*
बीमा प्रीमीयम *घटा :* पूर्वदत्त बीमा प्रीमियम			

स्थिति विवरण

.....को

देयताएं	*राशि (₹)*	*परिसम्पत्तियां*	*राशि (₹)*
		पूर्वदत्त बीमा	

4. उपार्जित आय (प्राप्त लेकिन आय प्राप्त नहीं हुआ) (Accrued Income)

उपार्जित आय का अर्थ है आय जिसको अर्जित तो कर लिया है लेकिन लेखा वर्ष की समाप्ति

टिप्पणी

तक प्राप्त नहीं हुई। उदाहरण के लिए प्रतिभूतियों पर ब्याज अथवा शेयरों पर लाभांश जो देय है, लेकिन जिनकी प्राप्ति की सम्भावना अगले वित्तीय वर्ष में किसी तिथि को है। इस प्रकार की आय तलपट में नहीं दिखाई गई है लेकिन इसका लेखा इसी वर्ष में होना आवश्यक है क्योंकि इस प्रकार की आय अर्जित हो चुकी है।

इस लेनदेन की समायोजन प्रविष्ट : माना कि प्राप्य किराया उपार्जित है लेकिन अभी प्राप्त नहीं हुआ है।

प्राप्य किराया (उपार्जित) खाता नाम
किराया प्राप्त से
(किराया देय लेकिन प्राप्त नहीं हुआ)

वित्तीय विवरणों में इसकी प्रविष्टि इस प्रकार होगी

लाभ हानि खाता
वर्ष को समाप्त के लिये.....

नाम जमा

विवरण	*राशि (₹)*	*विवरण*	*राशि (₹)*
		किराया प्राप्त *जमा :* किराया उपार्जित	

स्थिति विवरण

देयताएं	*राशि (₹)*	*परिसम्पत्तियां*	*राशि (₹)*
		किराया उपार्जित	

5. अनुपार्जित आय/अग्रिम में प्राप्त आय (Unearned Income)

कभी कभी कोई आय वास्तव में देय होने से पहले प्राप्त हो जाती है। ऐसी आय को अनुपार्जित आय या अग्रिम से प्राप्त आय कहते हैं। चूँकि ऐसी आय चालू वर्ष से सम्बन्धित नहीं होती इसे लाभ हानि खाते में सम्बन्धित आय के शीर्ष में से घटा देना चाहिए। ऐसी आय फर्म के लिए देनदारी होती है। इसलिए स्थिति विवरण में इसे देयताएं की ओर दिखाया जाता है। इसका उदाहरण है अगले लेखा वर्ष के लिए जनवरी, फरवरी मास का किराया प्राप्त हुआ। 31 दिसम्बर को समाप्त हुए लेखा वर्ष के लिए।

इसकी समायोजन प्रविष्टि इस प्रकार से होगी :

किराया प्राप्ति खाता नाम
अग्रिम किराया प्राप्त खाता से
(किराया अग्रिम प्राप्त हुआ)

वित्तीय विवरणों में लेखा

लाभ हानि खाता

नाम   जमा

विवरण	*राशि (₹)*	*विवरण*	*राशि (₹)*
		किराया प्राप्त हुआ *घटा :* किराया अग्रिम प्राप्त	

स्थिति विवरण

.... को

देयताएं	*राशि (₹)*	*परिसम्पत्तियां*	*राशि (₹)*
अग्रिम किराया प्राप्त			

पाठगत प्रश्न 18.2

उचित शब्द भर कर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिएः

i. व्यय जिनका सम्बन्ध वर्तमान लेखावर्ष से है लेकिन जिसका अभी भुगतान नहीं किया गया है .... कहलाता है।

ii. भुगतान खर्च का वह भाग जिसका सम्बन्ध अगले लेखा वर्ष से है .... कहलाता है।

iii. आय अर्जित कर ली गई है लेकिन वर्ष के अन्त तक प्राप्त नहीं की जा सकी है .... कहलाती है।

iv. आय जो देय होने से पहले ही प्राप्त हो चुकी है .... कहलाती है।

18.3 अन्य समायोजन

6. पूँजी पर ब्याज

व्यवसाय के अस्तित्व की अवधारणा के अनुसार स्वामी की पूँजी व्यवसाय के लिये देनदारी है। जैसे ऋणों पर ब्याज दिया जाता है उसी प्रकार से पूँजी पर भी ब्याज दिया जा सकता है। यदि यह देना है तो समायोजन प्रविष्टि इस प्रकार से की जायेगी :

पूँजी पर ब्याज खाता   नाम
        पूँजी खाता से
(पूँजी पर ब्याज दिया गया)

टिप्पणी

वित्तीय विवरणों में इसे इस प्रकार दिखाया जायेगा

लाभ हानि खाता

नाम जमा

विवरण	*राशि (₹)*	*विवरण*	*राशि (₹)*
पूँजी पर ब्याज			

स्थिति विवरण

..... को

देयताएं	*राशि (₹)*	*परिसम्पत्तियां*	*राशि (₹)*
पूँजी *जमा :* पूँजी पर ब्याज			

7. आहरण पर ब्याज

व्यवसाय के स्वामी ने घर खर्च के लिए व्यवसाय में से पैसा निकाला इस पर भी ब्याज लगाया जा सकता है। इसकी रोजनामचा प्रविष्टि इस प्रकार होगी।

पूँजी खाता नाम

आहरण पर ब्याज खाता से

(आहरण पर ब्याज लगाया)

वित्तीय विवरणों में इसका लेखा इस प्रकार होगा

लाभ हानि खाता

..... को समाप्त वर्ष के लिये

नाम जमा

विवरण	*राशि (₹)*	*विवरण*	*राशि (₹)*
		आहरण पर ब्याज	

स्थिति विवरण

नाम जमा

देयताएं	*राशि (₹)*	*परिसम्पत्तियां*	*राशि (₹)*
पूँजी घटा आहरण पर ब्याज			

टिप्पणी

8. अवक्षयण-ह्रास (Depreciation)

संयन्त्र एवं मशीन, फर्नीचर एवं फिक्सचर, भूमि एवं भवन, मोटरवाहन आदि स्थाई सम्पत्तियों के मूल्यों में घिसावट प्रचलन के बाहर होने या फिर अन्य किसी कारण में प्रतिवर्ष कमी आती रहती है।

स्थाई सम्पत्तियों का उपयोग क्योंकि आय अर्जन के लिए किया जाता है, इसलिए स्थाई सम्पत्ति के मूल्य में आने वाली कमी अन्य खर्चों के समान एक खर्च है। इसे अवक्षयण कहते हैं। इसे लाभ हानि खाते में खर्च के रूप में लिखा जाता है। इस प्रकार की सम्पत्तियों को स्थिति विवरण में अवक्षयण की राशि घटा कर घटे मूल्य पर दिखाई जाती है।

अवक्षयण के लिए रोजनामचा में समायोजन प्रविष्टि इस प्रकार होगी :

अवक्षयण खाता		नाम
	परिसम्पत्ति खाता से	
(..... पर अवक्षयण लगाया)		

वित्तीय विवरणों में इसका लेखा इस प्रकार होगा

लाभ हानि खाता

नाम जमा

विवरण	*राशि (₹)*	*विवरण*	*राशि (₹)*
अवक्षयण : संयन्त्र एवं मशीन, मोटर वाहन आदि पर			

स्थिति विवरण

देयताएं	*राशि (₹)*	*परिसम्पत्तियां*	*राशि (₹)*
		संयन्त्र एवं मशीन	
		घटा : अवक्षयण	.....
		मोटर वाहन	
		घटा : अवक्षयण	.....

नोट : यदि खाते बन्द करने से पहले ही अवक्षयण की गणना कर ली गई है तो यह तलपट के 'नाम' स्तम्भ में लिखी जायेगी। ऐसे में इसे लाभ हानि खाता के नाम में लिखा जायेगा तथा स्थिति विवरण में आगे समायोजन की आवश्यकता नहीं होगी।

टिप्पणी

9. अतिरिक्त अप्राप्य ऋण (Further Bad Debts)

जब माल को उधार बेचा जाता है तो कुछ देनदार देय राशि के एक भाग का ही भुगतान करते हैं या फिर बिल्कुल ही भुगतान नहीं करते। यदि इस राशि की वसूली सम्भव नहीं है तो इसे अप्राप्य ऋण कहा जायेगा तथा यह फर्म की हानि होगी। इसे लाभ–हानि खाते के नाम में दिखाया जायेगा। लेकिन अप्राप्य ऋण की एक ऐसी राशि हो सकती है जिसका लेखा लेखपुस्तकों में नहीं किया गया था और इसलिये यह तलपट में नहीं दिखाया जा सका। लेकिन इसका पता वित्तीय विवरणों के बनाने से पूर्व लग गया। इसे अतिरिक्त अप्राप्य ऋण कहते हैं।

इसकी समायोजन प्रविष्टि इस प्रकार होगी :

अप्राप्य ऋण खाता	नाम
देनदारों से	
(अप्राप्य ऋण का लेखा किया गया)	

लाभ–हानि खाता एवं स्थिति विवरण में इसका लेखा इस प्रकार से होगा :

लाभ हानि खाता

नाम जमा

विवरण	*राशि (₹)*	*विवरण*	*राशि (₹)*
अप्राप्य ऋण ***जमा :*** अतिरिक्त अप्राप्य ऋण			

स्थिति विवरण

..... को

देयताएं	*राशि (₹)*	*परिसम्पत्तियां*	*राशि (₹)*
		देनदार ***घटा :*** अतिरिक्त अप्राप्य ऋण	

10. अप्राप्य ऋण एवं संदिग्ध ऋण के लिये प्रावधान

किसी एक वर्ष के देनदार अगले वर्ष में अप्राप्य हो सकते हैं। इसका अर्थ हुआ कि अप्राप्य ऋण के कारण हानि को उस वर्ष में व्यय के रूप में लिखा जायेगा जिसमें यह हानि हुई है न कि उस वर्ष में जिससे इसका सम्बन्ध है। उचित लेखा तभी माना जायेगा जबकि अगले वर्ष में संभावित अप्राप्य ऋण की राशि की हानि की पूर्ति के लिए उचित राशि वर्त्तमान वर्ष में एक ओर रख दी गई है। अप्राप्य एवं संदिग्ध ऋणों के लिए प्रावधान करने से सम्बन्धित्

टिप्पणी

निर्णय वर्ष के अन्त में लिया जायेगा इसलिए यह एक समायोजन की मद है। इसे अप्राप्य एवं संदिग्ध ऋण के लिये प्रावधान कहा जाता है।

इसकी समायोजन प्रविष्टि इस प्रकार से होगी।

लाभ हानि खाता नाम
संदिग्ध ऋण के लिये प्रावधान खाता से
(संदिग्ध ऋण के लिए प्रावधान किया गया)

लाभ हानि खाता एवं स्थिति विवरण में इसका लेखा इस प्रकार से होगा

लाभ हानि खाता

नाम जमा

विवरण	*राशि (₹)*	*विवरण*	*राशि (₹)*
अप्राप्य ऋण ***जमा :*** संदिग्ध ऋण के लिए प्रावधान			

स्थिति विवरण

देयताएं	*राशि (₹)*	*परिसम्पत्तियां*	*राशि (₹)*
		देनदार ***घटा :*** संदिग्ध ऋणों के लिए प्रावधान	

माना देनदारों पर इस प्रकार का प्रावधान 5% की दर से किया गया। अब यदि अतिरिक्त अप्राप्य ऋण है तो अप्राप्य एवं संदिग्ध ऋण के लिये प्रावधान की गणना लेनदारों पर अतिरिक्त अप्राप्य ऋण की राशि को घटा कर की जायेगी।

व्यवसायी को पिछले कई वर्षों का अनुभव होगा कि उधार बिक्री के कारण उत्पन्न लेनदारी पर एक निश्चित दर से प्रतिवर्ष अप्राप्य हो जायेगा इसलिए संदिग्ध ऋण के लिए देनदारों पर एक निश्चित दर माना 5% से प्रावधान किया जायेगा। यह प्रतिशत् बदल जायेगा यदि परिस्थितियों में परिवर्त्तन आ गया है। उदाहरण के लिए यह प्रतिशत् कम हो जायेगा यदि व्यवसायी वस्तुओं का उधार विक्रय सोच विचार कर करने लगा है।

अप्राप्य एवं संदिग्ध ऋण के लिए देनदारों पर एक निश्चित दर से प्रतिवर्ष प्रावधान किया जाता है। पिछले वर्ष के शेष को इस वर्ष में हस्तान्तरित कर दिया जायेगा। इसे पुराना अप्राप्य एवं संदिग्ध ऋण कहेंगे। इस वर्ष के अप्राप्य ऋण अथवा/एवं अतिरिक्त अप्राप्य ऋण को इस प्रावधान में समायोजित कर दिया जायेगा तथा और अधिक प्रावधान किया जायेगा। इसे अप्राप्य ऋण के लिए नया प्रावधान कहा जा सकता है।

टिप्पणी

लाभ हानि खाते में इसे इस प्रकार से दिखाया जायेगा।

लाभ हानि खाता

नाम जमा

विवरण	*राशि (₹)*	*विवरण*	*राशि (₹)*
अप्राप्य ऋण *जमा :* अतिरिक्त अप्राप्य ऋण *जमा :* अप्राप्य एवं संदिग्ध ऋण के लिए प्रावधान (नया) *घटा :* अप्राप्य ऋण एवं संदिग्ध ऋण के लिए प्रावधान (पुराना)			

यदि पिछले वर्ष से लाया गया अप्राप्य एवं संदिग्ध ऋण के प्रावधान की शेष राशि, इस वर्ष के अप्राप्य ऋण, अतिरिक्त अप्राप्य ऋण एवं अप्राप्य ऋण के नये प्रावधान तीनों राशियों की कुल राशि से अधिक है तो आधिक्य राशि को लाभ हानि खाता के जमा में दिखाया जायेगा।

अप्राप्य एवं संदिग्ध ऋण की प्रावधान राशि देयता की मद होती है लेकिन मान्य पद्धति है कि इसे स्थिति विवरण की परिसम्पत्तियों की ओर पुस्तक ऋण/देनदार में से घटा कर दिखाया जाता है।

इसे निम्न उदाहरण से और अच्छी प्रकार से समझाया जा सकता है।

31 दिसम्बर, 2013 को एक एकाकी व्यापारी के तलपट में निम्न मदें दी गई हैं।

विवरण	*नाम शेष (₹)*	*जमा शेष (₹)*
देनदार	24,600	
अप्राप्य एवं संदिग्ध ऋण के लिये प्रावधान		1,000
अप्राप्य ऋण	700	

अतिरिक्त सूचना

अतिरिक्त अप्राप्य ऋण ₹ 600 है। देनदारों पर 5% से अप्राप्य एवं संदिग्ध ऋण के लिए प्रावधान करना है।

उपर्युक्त मदों को लाभ हानि खातें में दिखाइए तथा वित्तीय विवरणों में आवश्यक समायोजन कीजिए।

टिप्पणी

लाभ हानि खाता

31 दिसम्बर, 2013 को समाप्ति वर्ष के लिये

नाम जमा

विवरण		*राशि (₹)*	*विवरण*	*राशि (₹)*	
अप्राप्य ऋण	700				
जमा : अतिरिक्त अप्राप्य ऋण	600				
जमा : संदिग्ध ऋण के लिए नया प्रावधान	1,200				
	2,500				
घटा : संदिग्ध ऋण का पुराना प्रावधान	1,000	1,500			

स्थिति विवरण

31 दिसम्बर, 2013 को

देयताएं	*राशि (₹)*	*परिसम्पत्तियां*		*राशि (₹)*
		कुल देनदार	24,600	
		घटा : अतिरिक्त अप्राप्य ऋण	600	
			24,000	
		घटा : संदिग्ध ऋण के लिए नया प्रावधान	1,200	22,800

18.4 वित्तीय वक्तव्यों की तैयारी में समायोजन

11. देनदारों पर छूट के लिए प्रावधान

वर्ष के अन्त में अदत्त देनदार अगले वर्ष में भुगतान करते हैं यदि वह देय तिथि तक भुगतान करते हैं तो उन्हें नकद छूट प्राप्त होगी। अब क्योंकि देनदारी वर्ष में देय हुई है, छूट को इसी वर्ष का व्यय माना जाएगा। अतः देनदारों पर छूट के लिए प्रावधान किया जाएगा।

इसकी प्रक्रिया अप्राप्य ऋणों के लिए प्रावधान की प्रक्रिया के समान है। छूट की संभावित राशि को लाभ एवं हानि खाते के नाम में लिखा जाएगा और छूट खाता के लिए प्रावधान खाते के जमा में लिखा जाएगा। स्थिति विवरण में पुस्तक ऋण (देनदार) से इस राशि को घटा दिया जाएगा तथा इसे अगले वर्ष में ले जाया जाएगा। वर्तमान देनदारों को अगले वर्ष में दी

टिप्पणी

गई छूट को, छूट के लिए प्रावधान खाता के नाम में लिखा जाएगा न कि लाभ हानि खाते में। नाम में लिखने में प्रावधान खाता शेष कम हो जाएगा तथा आवश्यक राशि बनाने के लिए लाभ हानि खाता के नाम में तथा प्रावधान खाता के जमा में लिखा जाएगा जैसा कि अप्राप्य ऋण खाता के साथ किया जाता है।

एक महत्वपूर्ण बिन्दु ध्यान रखने योग्य है कि छूट अप्राप्य ऋणों पर नहीं दी जाती। इसीलिए छूट का प्रावधान केवल अच्छे ऋणों के लिए ही किया जाता है। दूसरे शब्दों में छूट पर प्रावधान की गणना विविध देनदारों में से अप्राप्य ऋण एवं संदिग्ध ऋणों के लिए प्रावधान को घटा कर आई राशि पर की जाती है। माना कि विविध देनदार ₹ 1,00,000 है। संदिग्ध ऋणों के लिए प्रावधान करना है 5% तथा छूट के लिए प्रावधान करना है 2.5%। इसलिए पहले हमें संदिग्ध ऋणों के लिए प्रावधान करनी होगी जो इस प्रकार है। 1,00,000 X 5 = 5,000 शेष राशि है ₹ 95,000। अब छूट के लिए प्रावधान की गणना की जाएगी, जो इस प्रकार से है 95,000 x 2.5% = ₹ 2,375।

लेखांकरन व्यवहार

(i) छूट प्रदान करने पर

छूट प्रदत्त खाता — नाम
  देनदार खाता से
(देनदारों को छूट प्रदान की)

(ii) छूट की राशि का लाभ–हानि खाते में हस्तान्तरण

लाभ–हानि खाता — नाम
  छूट प्रदत्त खाता से
(प्रदत्त छूट को लाभ–हानि खाता में हस्तान्तरण)

(iii) यदि लेखा पुस्तकों में पहले से ही प्रावधान दिया गया है तो प्रदत्त छूट को लाभ–हानि खाते के स्थान पर देनदारों पर छूट के लिए प्रावधान खाते में हस्तान्तरित कर दिया जाएगा। प्रविष्टि इस प्रकार से होगी–

देनदारों पर छूटों के लिए प्रावधान खाता — नाम
  प्रदत्त छूट खाता से
(छूट को देनदारों पर छूट के लिए प्रावधान खाते में हस्तान्तरण)

(iv) देनदारों पर छूट के लिए प्रावधान करना

लाभ–हानि खाता — नाम
  देनदारों पर छूट के लिए प्रावधान खाता से
(छूट के लिए प्रावधान खाता के शेष को लाभ–हानि खाता में लिखना)

टिप्पणी

उदाहरण 1

31 दिसम्बर 2012 को एक फर्म के विविध देनदार ₹ 4,00,000 थे। उसी तिथि को विविध देनदारों पर 2% से छूट के लिए प्रावधान किया गया। 2013 में प्रदत्त वास्तविक छूट ₹ 400 थी। 31 दिसम्बर 2013 को देनदार ₹ 3,00,000 थे। देनदारों पर 2% से छूट के लिए प्रावधान का निर्णय लिया गया। रोजनामचा प्रविष्टियां कीजिए एवं दोनों वर्षों के लिए छूट खाता एवं छूट के लिए प्रावधान खाता बनाइए।

रोजनामचा

तिथि	*विवरण*	*खाता पृ.सं.*	*नाम ₹*	*जमा ₹*
2012 दिस. 31	लाभ हानि खाता नाम देनदारों पर छूट के लिए प्रावधान खाता से (देनदारों पर छूट के लिए प्रावधान)		8,000	 8,000
2013 दिस. 31	छूट प्रदत्त खाता नाम विविध देनदार खाता से (भुगतान प्राप्ति पर छूट प्रदान की)		4,000	 4,000
दिस. 31	देनदारों पर छूट का प्रावधान खाता नाम प्रदत्त छूट खाता से (छूट प्रावधान खाते में हस्तान्तरित की)		4,000	 4,000
दिस. 31	लाभ–हानि खाता नाम देनदारों पर छूट का प्रावधान से (छूट का प्रावधान किया गया)		2,000	 2,000

देनदारों पर छूट के लिए प्रावधान

नाम जमा

तिथि	*विवरण*	*रो.पृ. सं.*	*₹*	*तिथि*	*विवरण*	*रो.पृ. सं.*	*₹*
2012 दिस.31	शेष आ.ले.		8,000	2012 दिस.31	लाभ–हानि खाता		8,000
			8,000				8,000

टिप्पणी

2013				2013			
दिस. 31	छूट प्रदत्त खाता		4,000	जन. 1	शेष आ.ला.		8,000
दिस. 31	शेष आ.ले.		6,000	दिस. 31	लाभहानि खाता		2,000
			10,000				10,000
				2014			
				जन. 1	शेष आ.ला.		6,000

देनदार पर छूट के लिए प्रावधान खाता

नाम जमा

तिथि	*विवरण*	*₹*	*तिथि*	*विवरण*	*₹*
2013			2013		
दिस. 31	विविध देनदार खाता	4,000	दिस. 31	छूट के लिए प्रावधान खाता	4,000
		4,000			4,000

12. मैनेजर का कमीशन

कभी–कभी मैनेजर को लाभ पर कमीशन देय होता है, जिसकी गणना सामान्यतः लाभ पर निश्चित प्रतिशत से की जाती है। माना कि कमीशन जो कि 5% है को बिना ध्यान में रखे ₹ 80,000 है तो कमीशन होगा ₹ 4,000 लाभ घटकर रह जाएगा ₹ 76,000। कमीशन की ₹ 4,000 की राशि का अभी भुगतान करना है तो इसे अदत्त व्यय माना जाएगा। प्रविष्टि होगीः

लाभ–हानि खाता नाम
अदत्त कमीशन खाता से

अदत्त कमीशन चालू देयता है तथा इसे स्थिति विवरण में दिखाया जाएगा।

कभी–कभी कमीशन के पश्चात बचे लाभ पर कमीयान की गणना की जाती है। यदि कमीशन की दर 5% है तथा कमीशन के पश्चात लाभ ₹ 100 है। तब कमीशन से पहले का लाभ होगा ₹ 105। इसका अर्थ हुआ कि कमीशन से पूर्व के लाभ ₹ 105 में से ₹ 5 कमीशन होगा। कमीशन की गणना का फार्मूला इस प्रकार है–

$$\frac{\text{कमीशन प्रतिशत}}{100 + \text{कमीशन प्रतिशत}} \times \text{कमीशन लगाने से पूर्व शुद्ध लाभ}$$

यदि कमीशन पूर्व लाभ ₹ 8,00,000 है और प्रबन्धक को 5% से कमीशन मिलता है तो कमीशन राशि होगी –

$$\frac{8,00,000 \times 5}{105} = ₹\ 3,80,950$$

उदाहरण 2

एक फर्म का कमीशन से पूर्व शुद्ध लाभ ₹ 1,05,000 है। फर्म के प्रबन्धक को शुद्ध लाभ का 5% कमीशन मिलना है। निम्न विकल्पों में प्रबन्ध का कमीशन की गणना कीजिए :

I. यदि प्रबन्धक को कमीशन लगाने से पूर्व शुद्ध लाभ पर कमीशन मिलना है।

II. यदि प्रबन्धक को कमीशन इस कमीशन के लगाने के पश्चात के शुद्ध लाभ पर मिलता है।

31 मार्च 2013 को समाप्त वर्ष के अन्त में खातों इसके व्यवहार को दर्शाइए।

हल :

स्थिति I

कमीशन लगाने से पूर्व शुद्ध लाभ पर कमीशन

$$\text{कमीशन} = \frac{\text{कमीशन प्रतिशत}}{100} \times \text{कमीशन लगाने से पूर्व शुद्ध लाभ}$$

$$\frac{1,05,000 \times 5}{100} = ₹\ 5,250$$

लाभ-हानि खाता

31 मार्च 2013 को समाप्त वर्ष के लिए

नाम जमा

विवरण	₹	*विवरण*	₹
प्रबंधक का कमीशन	5,250		

स्थिति विवरण

31 मार्च 2013 को

देयताएं	₹	*सम्पत्ति*	₹
चालू देयताएं			
प्रबन्धक का अदत्त कमीशन	5,250		

टिप्पणी

स्थिति II

कमीशन के पश्चात के शुद्ध लाभ पर कमीशन

$$\text{कमीशन} = \frac{\text{कमीशन प्रतिशत}}{100 + \text{कमीशन प्रतिशत}} \times \text{कमीशन लगाने से पूर्व शुद्ध लाभ}$$

$$\frac{1,05,000 \times 5}{105} = ₹\ 5,000$$

लाभ-हानि खाता

31 मार्च 2013 को समाप्त वर्ष के लिए

नाम जमा

विवरण	₹	*विवरण*	₹
प्रबन्धक का कमीशन	5,000		

स्थिति विवरण

31 मार्च 2013 को

देयताएं	₹	*सम्पत्तियां*	₹
चालू देयताएं			
प्रबन्धक का कमीशन अदत्त	5,000		

पाठगत प्रश्न 18.3

I. निम्नलिखित के लिये सही शब्द दीजिए :

i. देनदारों द्वारा देय राशि के विरूद्ध प्रावधान।

ii. घिसावट के कारण स्थाई सम्पत्तियों के मूल्य में कमी।

iii. लेनदारी जिसकी वसूली संभव नहीं है।

iv. वर्ष के अन्त में बिकने से रह गया माल का स्टॉक।

II. निम्न समायोजनों के लिए रोजनामचा प्रविष्टियों को पूरा कीजिए:

i. पूँजी पर ब्याज दिया

पूँजी पर ब्याज खाता नाम

..... खाता से

ii. अदत्त मजदूरी

मजदूरी खाता नाम

. ..... खाता से

iii. बीमा की किश्त छः महीने की अग्रिम

पूर्वदत्त बीमा खाता नाम

..... खाता से

iv. कमीशन अभी अर्जित नहीं किया परन्तु प्राप्त हो गया

कमीशन खाता नाम

..... खाता से

III. बताइए निम्न कथन सत्य हैं अथवा असत्य

i. देनदारों पर कटौती के लिए प्रावधान लाभ–हानि खाते के जमा में दिखाया जाता है।

ii. देनदारों पर कटौती के लिए प्रावधान को व्यवसाय की देनदारों में से घटाया जाता है।

iii. देनदारों पर कटौती के लिए प्रावधान व्यवसाय की आय है।

iv. देनदारों पर कटौती के लिए प्रावधान कम्पनी की सम्पत्ति है।

v. यदि कम्पनी के देनदार ₹ 10,000 है तथा कम्पनी उन पर 10% का कटौती के लिए प्रावधान कर रही है, तब कुल प्रावधान ₹ 1,000 होगा।

IV. उचित शब्द भरकर रिक्त स्थानों की पूर्ति करें :

i. प्रबन्धक के कमीशन को लाभ–हानि खाते के ..... की ओर दिखाया जाता है।

ii. प्रबन्धक के कमीशन को स्थिति विवरण की ..... ओर दर्शाया जाता है।

iii. आग, भूकम्प अथवा दुर्घटना से होने वाली हानियां कहलाती है ..... हानियां।

उदाहरण 3

एम. बी. गारमैटस के 31 दिसम्बर, 2013 के तलपट से वर्ष समाप्ति 31 दिसम्बर, 2013 के लिये व्यापार खाता एवं लाभ–हानि खाता तैयार कीजिए तथा इसी तिथि को स्थिति विवरण भी बनाइए:

खाते का नाम	*नाम राशि (₹)*	*जमा राशि (₹)*
पूँजी		80,000
हस्तस्थ रोकड़	570	
बैंक में रोकड़	5,600	
क्रय	43,200	

टिप्पणी

विक्रय		78,000
मजदूरी	10,400	
बिजली	4,730	
आन्तरिक भाड़ा	2,040	
बाह्य भाड़ा	3,200	
स्टाक (1.1.2013)	5,660	
भूमि एवं भवन	40,000	
मशीन	20,000	
वेतन	4,000	
बीमा	600	
विविध देनदार	28,000	
विविध लेनदार		10,000
	1,68,000	1,68,000

निम्न समायोजनों का लेखा करना है:

1. 31.12.2013 को स्टॉक ₹ 10,000 रुपये था।
2. मशीन पर अवक्षयण 10% वार्षिक, भूमि एवं भवन पर अवक्षयण 2% वार्षिक
3. दिसम्बर के लिए अदत्त वेतन ₹ 1,200 रुपये था।
4. बीमा प्रीमियम की राशि का भुगतान वर्ष समाप्ति 30 जून 2014 तक किया गया।

समायोजन के लिए रोजनामचा में प्रविष्टि कीजिए तथा व्यापार खाता एवं लाभ हानि तथा स्थिति विवरण तैयार कीजिए।

हल:

रोजनामचा

तिथि	*विवरण*	*खाता पृ.सं.*	*नाम ₹*	*जमा ₹*
2013 दिस. 31	अन्तिम स्टॉक खाता नाम व्यापार खाता से (अन्तिम स्टॉक का व्यापार खाता में हस्तान्तरण)		10,000	10,000
दिस. 31	अवक्षयण खाता नाम मशीन खाता से भूमि एवं भवन खाता से (मशीन पर 10% वार्षिक से एवं भूमि तथा भवन पर 2% वार्षिक से अवक्षयण लगाया गया)		2,800	2,000 800

दिस. 31	वेतन खाता नाम अदत्त वेतन खाता से (दिसम्बर 2013 के लिए वेतन देय लेकिन भुगतान नहीं किया।)		1,200	 1,200
दिस. 31	पूर्वदत्त बीमा खाता नाम बीमा खाता से (पूर्वदत्त बीमा का भुगतान का लेखा किया गया)		300	 300

व्यापार खाता

31 दिसम्बर, 2013 को समाप्त वर्ष के लिये

नाम जमा

विवरण	₹	*विवरण*	₹
स्टॉक	5,660	विक्रय	78,000
क्रेता	43,200	अन्तिम स्टॉक	10,000
मजदूरी	10,400		
बिजली	4,730		
आंतरिक भाड़ा	2,040		
सकल लाभ लाभ हानि खाता में हस्तान्तरित	21,970		
	88,000		88,000

लाभ हानि खाता

31 दिसम्बर 2013 को समाप्त वर्ष के लिये

नाम जमा

विवरण		₹	*विवरण*	₹
बाह्य भाड़ा		3,200	सकल : लाभ, व्यापार	
वेतन	4,000		खाता से हस्तान्तरित	21,970
जमा : अदत्त वेतन	1,200	5,200		
बीमा	600			
घटा : पूर्वदत्त व्यय	300	300		
अवक्षयण :				
मशीन पर	2,000			
भूमि एवं भवन पर	800	2,800		

टिप्पणी

शुद्ध लाभ पूँजी खाते में हस्तान्तरित	10,470		
	21,970		21,970

स्थिति विवरण
31 दिसम्बर, 2014 को

देयताएं		*₹*	*परिसम्पत्तियां*		*₹*
अदत्त वेतन		1,200	हस्तस्थ रोकड़		570
विविध लेनदार		10,000	बैंक में रोकड़		5,600
पूँजी	80,000		विविध देनदार		28,000
जमा : शुद्ध लाभ	10,470	90,470	अन्तिम स्टॉक		10,000
			पूर्वदत्त बीमा		300
			भूमि एवं भवन	40,000	
			घटा : अवक्षयण	800	392,00
			मशीन	20,000	
			घटा : अवक्षयण	2,000	18,000
		1,01,670			1,01,670

उदाहरण 4

मुस्तफा एण्ड कंपनी के नीचे दिये तलपट से वर्ष समाप्ति 31 दिसम्बर 2013 के लिए व्यापार खाता एवं लाभ हानि खाता तैयार कीजिए तथा उसी तिथि को स्थिति विवरण बनाइए। रोजनामचे में समायोजन प्रविष्टि भी कीजिए।

खाते का नाम	*नाम शेष राशि (₹)*	*खाते का नाम*	*जमा शेष राशि (₹)*
भूमि एवं भवन	60,000	पूँजी	50,000
संयन्त्र एवं मशीन	40,000	कुल लेनदार	10,000
प्राप्य प्रपत्र	8,000	बिक्री	1,20,000
स्टॉक (1.1.2013)	40,000	संदिग्ध ऋण के	
क्रय	51,000	लिए संचय	4,500
मजदूरी	20,000	ऋण (12% वार्षिक)	10,000
कोयला, गैस एवं कोक	5,800	कमीशन प्राप्त हुआ	2,000
वेतन	5,000		
किराया	2,800		

टिप्पणी

बैंक में रोकड़	25,000		
विविध देनदार	45,000		
मरम्मत	1,800		
अप्राप्य ऋण	5,500		
विक्रय वापसी	2,000		
फर्नीचर एवं फिक्सचर	4,000		
ऋण पर ब्याज	600		
	3,16,500		3,16,500

समायोजन :

1. अन्तिम स्टॉक ₹ 30,000 था।
2. संयन्त्र एवं मशीन पर अवक्षयण 5% तथा फर्नीचर एवं फिक्सचर पर 10% की दर से लगाया गया।
3. अप्राप्य एवं संदिग्ध ऋणों के लिए 5% का प्रावधान करना है।
4. अदत्त मजदूरी ₹ 1,000, किराया ₹ 500 तथा ऋण पर ब्याज ₹ 600 लगाना है।
5. उपार्जित कमीशन ₹ 1,000 है।

हल :

रोजनामचा (समायोजन प्रविष्टियां)

तिथि	*विवरण*	*खाता पृ.सं.*	*नाम ₹*	*जमा ₹*
2013 दिस. 31	अन्तिम स्टॉक नाम		30,000	
	व्यापार खाता से			30,000
	(अन्तिम स्टॉक की खतौनी)			
	अवक्षयण खाता नाम		2,400	
	संयन्त्र एवं मशीन से			2,000
	फर्नीचर एवं फिक्सचर से			400
	(संयन्त्र एवं मशीन पर 5% अवक्षयण और फर्नीचर पर 10% अवक्षयण)			
	लाभ हानि खाता नाम		2,250	
	संदिग्ध ऋण के लिए संचय से			2,250
	(संदिग्ध ऋण के लिए संचय किया गया)			

टिप्पणी

मजदूरी खाता	नाम		1,000	
किराया खाता	नाम		500	
अदत्त व्यय खाता से				1,500
(अदत्त व्यय के लिए प्रावधान)				
कमीशन	नाम		1,000	
उपार्जित कमीशन प्राप्त खाता से				1,000
(.....)				
ऋण पर ब्याज खाता	नाम		600	
ऋण पर अदत्त ब्याज खाता से				600
(ऋण पर ब्याज देय लेकिन भुगतान नहीं किया)				

मै. मुस्तफा एण्ड कं. व्यापार एवं लाभ हानि खाता
31 दिसम्बर, 2013 को समाप्त वर्ष के लिये

नाम जमा

विवरण		₹	*विवरण*		₹
प्रारम्भिक स्टॉक		40,000	विक्रय	1,20,000	
क्रय		51,000	***घटा :*** विक्रय		
मजदूरी	20,000		वापसी	2,000	1,18,000
जमा : अदत्त मजदूरी	1,000	21,000	अन्तिम स्टॉक		30,000
कोयला, गैस एवं कोक		5,800			
सकल लाभ आ/ले		30,200			
		1,48,000			1,48,000
वेतन		5,000	सकल लाभ आ/ला		30,200
किराया	2,800		कमीशन प्राप्त किया	2,000	
जमा : अदत्तराशि	500	3,300	***जमा :*** उपार्जित		
मरम्मत		1,800	कमीशन	1,000	3000
डूबत ऋण	5,500				
जमा : नया प्रावधान	2,250				
	7,750				
घटा : पुराना प्रावधान	4,500	3,250			
ऋण पर ब्याज	600				
जमा : अदत्त ब्याज	600	1,200			
अवक्षयण :					
संयन्त्र एवं मशीन	2,000				
फर्नीचर एवं फिक्सचर	400	2,400			

शुद्ध लाभ-पूँजी खाते में हस्तान्तरित	16,250		
	33,200		33,200

मै. मुस्तफा एण्ड कं.
स्थिति विवरण
31.12.2013 को

देयताएं		₹	*परिसम्पत्तियां*		₹
विभिन्न लेनदार		30,000	बैंक में रोकड़		25,000
ऋण		10,000	प्राप्य विपत्र		8,000
अदत्त ब्याज		600	विभिन्न लेनदार	45,000	
अदत्त व्यय :			*घटा :* संदिग्ध ऋणों के लिए प्रावधान	2,250	42,750
मजदूरी		1,000	अन्तिम स्टॉक		30,000
किराया		500	फर्नीचर एवं फिक्सचर	4,000	
पूँजी	1,50,000		*घटा :* अवक्षयण	400	3,600
जमा : शुद्धलाभ	16,250	1,66,250	संयन्त्र एवं मशीन	40,000	
			घटा : अवक्षयण	2,000	38,000
			भूमि एवं भवन		60,000
			उपार्जित कमीशन		1,000
		2,08,350			2,08,350

उदाहरण 5

31 मार्च 2013 को समाप्त वर्ष के निम्न शेष तथा अतिरिक्त सूचना से कनोहल एंड संस के लिए व्यापार खाता एवं लाभ–हानि खाता बनाइए :

	₹		₹
पूँजी	80,000	बीमा	600
क्रय	82,000	वेतन	12,500
विक्रय	1,10,000	अप्राप्य ऋण	200
बाह्य वापसी	1,000	क्रय पर भाड़ा	1,500
भवन	45,000	कमीशन (जमा)	1,500
प्रारम्भिक स्टाक	15,000	हस्तस्थ रोकड़	5,000
देनदार	20,100	बैंक में रोकड़	25,000
लेनदार	28,000	विक्रय कर भुगतान किया	5,000

टिप्पणी

फर्नीचर	7,000	विक्रय कर एकत्रित किया	3,500
मजदूरी	1,800	निवेश पर ब्याज	500
किराया	5,100		

अतिरिक्त सूचना :

i. अन्तिम स्टॉक का मूल्य था ₹ 20,000
ii. भवन पर 5% एवं फर्नीचर पर 10% अवक्षयण लगाना है।
iii. अदत्त वेतन ₹ 1,000
iv. बीमा पूर्वदत्त ₹ 50
v. कमीशन उपार्जित ₹ 300
vi. प्रबन्धक को 5% से कमीशन देना है जो इस कमीशन के लगाने के पश्चात के शुद्ध लाभ पर होगा।

हल :

व्यापार एवं लाभ-हानि खाता

31 दिसम्बर 2013 को समाप्त वर्ष के लिए

नाम जमा

विवरण		*₹*	*विवरण*		*₹*
प्रारम्भिक स्टॉक		15,000	विक्रय		1,10,000
क्रय	82,000		अन्तिम स्टॉक		20,000
घटा : बाह्य वापसी	1,000	81,000			
मजदूरी		1,800			
क्रय पर भाड़ा		200			
सकल लाभ आ.ले.		32,000			
		1,30,000			1,30,000
किराया		5,100	सकल लाभ आ.ला.		32,000
बीमा	600		निवेश पर ब्याज		500
घटा : पूर्वदत्त बीमा	50	550	कमीशन	1,500	
वेतन	12,500		उपार्जित कमीशन	300	1,800
जमा : अदत्त	1,000	13,500			
अप्राप्य ऋण		200			
अवक्षयण :					
भवन	2,250				
फर्नीचर	700	2,950			
प्रबन्धक के कमीशन					

टिप्पणी

पूर्व लाभ $\frac{12,000\times5}{105}$	571		
प्रबन्धक के कमीशन के पश्चात शुद्ध लाभ	11,429		
	34,300		34,300

स्थिति विवरण

31 दिसम्बर 2013 को

देयताएं		₹	*परिसम्पत्तियां*		₹
लेनदार		28,000	हस्तस्थ रोकड़		5,000
अदत्त वेतन		1,000	बैंक में रोकड़		25,000
प्रबन्धक का कमीशन		571	अन्तिम स्टॉक		20,000
पूँजी	80,000		देनदार		20,100
जमा : शुद्ध लाभ	11,429	91,429	पूर्वदत्त कर भुगतान किया (विक्रय कर – विक्रय कर एकत्रित)		1,500
			उपार्जित कमीशन		300
			पूर्वदत्त बीमा		50
			भवन	45,000	
			घटा : अवक्षण	2,250	24,750
			फर्नीचर	7,000	
			घटा : अवक्षयण	700	6,300
		1,21,000			1,21,000

$$\text{प्रबंधक का कमीशन} = \frac{\text{कमीशन प्रतिशत}}{100 + \text{कमीशन प्रतिशत}} \times \text{कमीशन लगाने से पूर्व शुद्ध लाभ}$$

$$\frac{12,000 \times 5}{100 + 5}$$

$$\frac{12,000 \times 5}{105} = ₹\ 571$$

13. असमान्य हानियां

यह हानियां, अग्नि, भूकम्प अथवा दुर्घटना के कारण होती हैं। इनके कारण फर्म की कुछ स्थाई सम्पतियां नष्ट हो जाती है। ऐसे में सम्पत्ति खाते के जमा में तथा लाभ–हानि खाते के नाम में लिखा जाता है। यह नाम दो अथवा तीन वर्ष में बांट दिया जाता है।

टिप्पणी

स्टॉक भी आग अथवा अन्य कारणों से नष्ट हो सकता है अथवा क्षतिग्रस्त हो सकता है। स्वभाविक है कि इसके कारण स्टॉक का मूल्य कम हो जाएगा। इससे शुद्ध सकल लाभ एवं शुद्ध लाभ कम हो जाएगा। अधिक अच्छा रहेगा कि सकल लाभ का निर्धारण यह मानकर किया जाए कि इस प्रकार की हानि नहीं हुई है। इससे फर्म के व्यापारिक परिचालन का भली भांति आकंलन हो सकेगा।

स्टॉक की हानि के प्रभाव करने के लिए व्यापार खाता के जमा में अग्नि से नष्ट वस्तुओं की लागत को लिखा जाएगा। यदि नष्ट हुए माल की बीमा नहीं कराया गया है, नष्ट हुई वस्तुओं का लागत मूल्य को लाभ–हानि खाते के नाम में लिखा जाएगा। यदि वस्तुओं बीमित हैं तो बीमा कम्पनी द्वारा स्वीकृत दावे की राशि को घटा दिया जाएगा और शेष राशि को लाभ एवं हानि खाते के नाम में लिखा जाएगा। समायोजित प्रविष्टि इस प्रकार से हैं :

i. दुर्घटना से स्टॉक की हानि

खाता अथवा अग्नि से हानि खाता		नाम	(कुल असामान्य हानि)
	व्यापार खाता से		

ii. बीमा दावा खाता अथवा बीमा कम्पनी नाम (बीमा दावा राशि)

लाभ हानि खाता		नाम	(हानि जो पूरी न की जाएगी)
	स्टॉक का दुर्घटना से हानि से		(कुल सामान्य हानि)

बीमा कम्पनी खाता को स्थिति विवरण में सम्पत्ति के रूप में दिखाया जाएगा

नोट : यदि स्टॉक का बीमा नहीं कराया गया है तो निम्न प्रविष्टि की जाएगी

लाभ–हानि खाता		नाम	कुल असमान्य हानि
	व्यापार खाता से		

उदाहरण 6

31 दिसम्बर 2013 को ₹ 4,00,000 मूल्य के स्टॉक आग से नष्ट हो गया। स्टॉक का बीमा कराया गया था, बीमा कम्पनी ने केवल ₹ 3,00,000 का दावा स्वीकार किया। आवश्यक रोजनामचा प्रविष्टि कीजिए एवं अन्तिम खातों में इसके व्यवहार को दर्शाइए।

हल

रोजनामचा

तिथि	*विवरण*	*खा.पृ. सं.*	*नाम ₹*	*जमा ₹*
2013 दिस. 31	अग्नि से हानि नाम व्यापार खाता से (स्टाक की अग्नि से हानि)		4,00,000	4,00,000

मार्च 31	बीमा कम्पनी	नाम		3,00,000	
	लाभ–हानि खाता	नाम		1,00,000	
	अग्नि से हानि				4,00,000
	(बीमा कम्पनी ने कुछ दावा स्वीकार किया)				

व्यापार खाता

वर्ष समाप्त 31 दिसम्बर 2013 के लिए

नाम — जमा

विवरण	₹	*विवरण*	₹
		अग्नि के कारण हानि	4,00,000

लाभ-हानि खाता

वर्ष समाप्त 31 दिसम्बर 2013 के लिए

विवरण		₹	*विवरण*	₹
अग्नि के कारण हानि	4,00,000			
घटा : बीमा दावा	3,00,000	1,00,000		

स्थिति विवरण

31 दिसम्बर 2013 को

देयताएं	₹	*परिसम्पत्तियां*	₹
		चालू सम्पत्तियां	
		बीमा कंपनी से प्राप्त दावा	3,00,000

उदाहरण 7

श्री घनश्याम के नीचे दिए गये खाता शेष से 31 मार्च 2013 को समाप्त वर्ष के लिए व्यापार खाता एवं लाभ–हानि खाता तथा उसी तिथि को आवश्यक समायोजन कर स्थिति विवरण तैयार कीजिए।

विवरण	₹	*विवरण*	₹
व्यापार व्यय	8,000	क्रय	8,20,000
भाड़ा एवं शुल्क	20,000	स्टॉक (1.4.2012)	1,50,000
बाह्य भाड़ा	5,000	संयन्त्र एवं	
विविध देनदार	2,06,000	मशीनरी (1.4.2012)	2,00,000
फर्नीचर फिक्सचर	50,000	संयन्त्र एवं मशीनरी	

टिप्पणी

आन्तरिक वापसी	20,000	नया क्रय (1.4.2012)	50,000
प्रिंटिग एवं स्टेशनरी	4,000	आहरण	60,000
किराया, शुल्क एवं कर	46,000	पूँजी	8,00,000
विविध लेनदार	1,00,000	संदिग्ध ऋणों के	
विक्रय	12,00,000	लिए प्रावधान	8,000
वापसी बाह्य	10,000	परिसर से किराया	16,000
पोस्टेज एवं टेलीग्राम	8,000	बीमा व्यय	7,000
		वेतन एवं मजदूरी	2,13,000
		हस्तस्थ रोकड़	62,000
		बैंक में रोकड़	2,05,000

समायोजन :

i. 31 मार्च 2013 को स्टॉक ₹ 1,40,000 था।

ii. ₹ 600 अप्राप्य ऋण के अपलिखित करें।

iii. संदिग्ध ऋणों के लिए 5% की दर से प्रावधान करना है।

iv. फर्नीचर, फिक्सचर पर 5% वार्षिक तथा संयन्त्र एवं मशीनरी पर 20% वार्षिक से अवक्षण लगाना है।

v. बीमा का अग्रिम भुगतान ₹ 1,000

vi. गोदाम में आग लग गई जिससे ₹ 50,000 के मूल्य का स्टॉक नष्ट हो गया। इसका बीमा कराया गया तथा बीमा कम्पनी ने पूरा दावा स्वीकार किया।

हल :

व्यापार एवं लाभ-हानि खाता

वर्ष समाप्त 31 मार्च 2013 के लिए

नाम जमा

विवरण		*₹*	*विवरण*		*₹*
प्रारम्भिक स्टॉक		1,50,000	विक्रय	12,00,000	
क्रय	8,20,000		अन्तः वापसी	20,000	11,80,000
बाह्य वापसी	10,000	8,10,000	अग्नि के कारण स्टॉक		
भाड़ा एवं शुल्क		20,000	की हानि		50,000
सकल लाभ आ.ले.		3,90,000	अन्तिम स्टॉक		1,40,000
		13,70,000			13,70,000

व्यापार व्यय		8,000	सकल लाभ आ.ले.		3,90,000
भाड़ा बाह्य		5,000	परिसर से किराया		16,000
फर्नीचर फिक्सचर पर अवक्षयण	2,500				
संयन्त्र एवं मशीनरी पर अवक्षयण	40,000				
	5,000	47,500			
प्रिंटिग एवं स्टेशनरी		4,000			
किराया, शुल्क एवं कर		46,000			
बीमा	7,000				
घटा : पूर्वदत्तर	1,000	6,000			
वेतन एवं मजदूरी		2,13,000			
पोस्टेज एवं टेलीग्राम		8,000			
संदिग्ध ऋणों के लिए प्रावधान	10,000				
अतिरिक्त अप्राप्य ऋण	6,000				
	16,000				
घटा : संदिग्ध ऋणों के लिए प्रावधान	8,000	8,000			
शुद्ध लाभ पूंजी खाते में हस्तान्तरण		60,500			
		4,06,000			4,06,000

स्थिति विवरण

31 मार्च 2013 को

देयताएँ	*₹*	*सम्पत्तियाँ*	*₹*
चालू देयताएँ :		चालू सम्पत्तियाँ :	
विविध लेनदार	1,00,000	हस्तस्थ रोकड़	62,000

टिप्पणी

पूँजी :			बैंक में रोकड़		2,05,000
प्रारम्भिक शेष	8,00,000		विविध देनदार	2,06,000	
जमा : शुद्ध लाभ	60,500		*घटा :* अतिरिक्त अप्राप्य ऋण	6,000	
	8,60,500			2,00,000	
घटा : आहरण	60,000	8,06,500	*घटा :* अप्राप्य ऋणों के लिए प्रावधान	10,000	1,90,000
			अन्तिम स्टॉक		1,40,000
			बीमा दावा		50,000
			पूर्वदत्त बीमा		1,000
			स्थाई सम्पत्तियां		
			फर्नीचर एवं फिक्चर	50,000	
			घटा : अवक्षण	2,500	47,500
			संयन्त्र एवं मशीनरी	2,50,000	
			घटा : अवक्षयण	45,000	2,05,000
		9,00,500			9,00,500

14. स्वामी द्वारा वस्तुओं का आहरण

जब व्यवसाय स्वामी व्यवसाय से कुछ वस्तुएं अथवा रोकड़ अपने व्यक्तिगत उपयोग के लिए निकालता है, इसे आहरण करते हैं।

अब यदि आप पाते हैं कि इसका पुस्तकों में अभिलेखन नहीं किया गया है तो आपको इसे अन्तिम खातों में लाने के लिए समायोजन करना होगा। व्यवसाय स्वामी द्वारा वस्तुओं के इस आहरण का अन्तिम खातों में व्यवहार इस प्रकार से होगा–

i. व्यापार खाते के नाम पक्ष में क्रय में से इसे घटा दें।

ii. स्थिति विवरण के देयता पक्ष में या तो पूँजी में से घटा दिया जाएगा अथवा आहरण में जमा कर दिया जाएगा।

आहरण का लेखा व्यवहार

I. नकद आहरण

i. आहरण खाता नाम
रोकड़ खाता/बैंक खाता से
(निजी उपयोग के लिए नकद आहरण)

ii. पूँजी खाता नाम
आहरण खाता से
(आहरण का हस्तान्तरण)

II. स्वामी द्वारा माल का आहरण

i. आहरण खाता नाम
क्रय खाता से
(निजी उपयोग हेतु माल का आहरण)

ii. पूँजी खाता नाम
आहरण खाता से
(आहरण का हस्तान्तरण)

III. व्यवसाय की रोकड़ में से एकल स्वामी द्वारा आयकर का भुगतान

i. आयकर खाता नाम
रोकड़/बैंक खाता से
(आयकर का भुगतान किया)

ii. आहरण खाता नाम
आयकर खाता से
(आहरण का हस्तान्तरण)

15. वस्तुओं का मुफ्त वितरण

विक्रय संवर्धन के लिए कुछ वस्तुओं का मुफ्त नमूने के रूप में वितरण किया जा सकता है। उदाहरण के लिए ₹ 10,000 मूल्य का माल मुफ्त नमूने के रूप में वितरित किया गया। यह व्यवसाय के लिए विज्ञापन होगा, दूसरी ओर स्टॉक इतनी राशि से कम हो जाएगा। इसकी लेखा पुस्तकों में प्रविष्टि निम्न होगी :

विज्ञापन खाता नाम
क्रय खाता से
(वस्तुओं का मुफ्त नमूने के रूप में वितरण)

इस प्रविष्टि का दोहरा प्रभाव इस प्रकार से होगा :

i. इसको व्यापार खाते के जमा में लिखेंगे या फिर क्रय खाते में से घटा लेंगे।

ii. इसे लाभ–हानि खाते के नाम पक्ष के विज्ञापन व्यय के रूप में दिखाएंगे।

उदाहरण 8

निम्न तलपट में 31 मार्च 2014 को समाप्त वर्ष के लिए व्यापार खाता एवं लाभ–हानि खाता बनाइए तथा इसी तिथि को स्थिति विवरण बनाइए।

टिप्पणी

नाम शेष	*₹*	*जमा शेष*	*₹*
वेतन	10,600	विक्रय	66,420
प्राप्य बिल	6,000	पूँजी	50,000
निवेश	40,000	संदिग्ध ऋणों के	
फर्नीचर	12,000	लिए प्रावधान	2,500
आरम्भिक स्टॉक	4,500	10% ऋण (1.10.2013)	10,000
क्रय	30,000	छूट प्राप्त हुई	400
विविध देनदार	20,000	विविध लेनदार	9,300
ऋण पर ब्याज	400	देय विपत्र	5,000
बीमा प्रीमियम	900	अदत्त वेतन	500
मजदूरी	4,600	अप्राप्य ऋण वसूल हुए	200
किराया	1,520	निवेश पर ब्याज	2,000
अप्राप्य ऋण	1,200	व्यापारिक कमीशन	7,000
बाह्य भाड़ा	600		
बैंक में रोकड़	10,000		
फर्नीचर पर अवक्षयण	2,500		
उपार्जित कमीशन	1,000		
विज्ञापन	7,500		
	1,53,320		1,53,320

समायोजन :

i. अन्तिम स्टाक ₹ 6,000

ii. 1,000 मूल्य की वस्तुओं का मुफ्त नमूने के रूप में वितरण किया गया और ₹ 500 की वस्तुएं व्यवसाय स्वामी निजी उपयोग के लिए ले गया।

iii. ₹ 2,000 के उधार विक्रय का विक्रय बही में अभिलेखन नहीं किया गया।

iv. अन्तिम स्टाक में ₹ 1,000 मूल्य की वस्तुएं सम्मलित हैं, जिन्हें विक्रय किया और विक्रय के रूप में अभिलेखन भी किया लेकिन ग्राहक को सुपुर्दगी नहीं की गई।

v. संदिग्ध ऋणों के लिए 5% का प्रावधान करें।

vi. विज्ञापन व्यय का केवल 1/3 भाग ही अपलिखित करना है।

टिप्पणी

हल :

व्यापार एवं लाभ-हानि खाता
31 मार्च 2014 को समाप्त वर्ष के लिए

नाम जमा

विवरण		₹	*विवरण*		₹
प्रारम्भिक स्टॉक		4,500	विक्रय	66,420	
क्रय	30,000		*जमा :* उधार विक्रय	2,000	68,450
घटा : वस्तुओं का मुफ्त विवरण	1,000		अन्तिम स्टॉक	6,000	
	29,000		*घटा :* विक्रय की गई वस्तुएं जिनकी सुपुर्दगी नहीं की गई	1,000	5,000
घटा : वस्तुओं का आहरण	500	28,500			
मजदूरी		4,600			
सकल लाभ आ.ले.		35,820			
		73,420			73,420
वेतन		10,600	सकल लाभ आ.ला.		35,820
ऋण पर ब्याज	400		अप्राप्य ऋणों के पुराना प्रावधान	2,500	
जमा: अदत्त ब्याज	100	500	*घटा:* अप्राप्य ऋण	1,200	
बीमा प्रीमियम		900		1,300	
किराया		1,520	*घटा:* नया प्रावधान	1,100	200
भाड़ा बाह्य		600	कर छूट प्राप्त हुई		400
फर्नीचर पर अवक्षयण		2,500	अप्राप्य ऋण वसूल हुए		200
विज्ञापन		2,500	निवेश पर ब्याज		2,000
मुफ्त नमूने		1,000	व्यापारिक कमीशन		7,000
शुद्ध लाभ– पूँजी खाते में हस्तान्तरित		25,500			
		45,620			45,620

स्थिति विवरण
31 मार्च 2013 को

देयताएं		₹	*परिसम्पत्तियां*	₹
पूँजी	50,000		बिल प्राप्य	6,000
जमा : शुद्ध लाभ	25,500		निवेश	40,000
	75,500		फर्नीचर	12,000

टिप्पणी

घटा : आहरण	500	75,000	देनदार	20,000	
10% ऋण		10,000	***जमा :*** उधार विक्रय		
ऋण पर अदत्त ब्याज		100	जिनका अभिलेखन		
लेनदार		9,300	नहीं किया गया	2,000	
देय विपत्र		5,000		22,000	
वेतन अदत्त		500	***घटा :*** नया प्रावधान	1,100	20,900
			कमीशन उपार्जित		1,000
			अन्तिम स्टॉक		5,000
			बैंक		10,000
			विज्ञापन व्यय अवलिखित		5,000
		99,900			99,900

समायोजन प्रविष्टियों का संक्षिप्त स्वरूप

समायोजन	*समायोजन प्रविष्टि*	*व्यापार तथा लाभ व हानि खाते में व्यवहार*	*स्थिति विवरण में व्यवहार*
1. अन्तिम स्टॉक	अन्तिम स्टॉक खाता नाम व्यापार खाता से	व्यापार खाते के जमा पक्ष में	परिसम्पत्ति के पक्ष दर्शायेंगे
2. अदत्त व्यय	व्यय खाता नाम अदत्त व्यय खाता से	नाम पक्ष में संबन्धित व्यय में जोड़ेगे	दायित्व पक्ष में दर्शाएंगे
3. पूर्वदत्त व्यय	पूर्वदत्त व्यय खाता नाम व्यय खाता से	नाम पक्ष में संबंधित व्यय में से घटाएंगे	परिसंपत्ति पक्ष में दर्शाएंगे
4. उपार्जित आय	उपार्जित आय खाता नाम आय खाता से	जमा पक्ष में संबंधित आय में जोड़ेगे	परिसंपत्ति पक्ष में दर्शाएंगे
5. अग्रिम प्राप्त आय	आय खाता नाम अग्रिम प्राप्त खाता से	जमा पक्ष में संबंधित आय में से घटाएंगे	दायित्व पक्ष में दर्शाएंगे
6. पूँजी पर ब्याज	पूँजी पर ब्याज खाता नाम पूँजी खाता से	नाम पक्ष में दिखाएंगे	पूँजी में जोड़कर दिखाएंगे
7. आहरण पर ब्याज	पूँजी खाता नाम आहरण पर ब्याज खाता से	जमा पक्ष में दिखाएंगे	देनदारों में से घटाकर दर्शायेगे
8. अवक्षयण	अवक्षयण खाता नाम परिसम्पत्ति खाता से	नाम पक्ष में दर्शाएंगे	परिसंपत्ति के मूल्य में से घटाकर दर्शायेगे
9. अतिरिक्त अप्राप्य ऋण	अप्राप्य ऋण खाता नाम लाभ बही खाता से	नाम पक्ष में दर्शाएंगे	देनदारों में से घटाएंगे

टिप्पणी

10. संदिग्ध ऋणों के लिये प्रावधान	लाभ-हानि खाता नाम अप्राप्य एवं संदिग्ध ऋणों के लिये प्रावधान खाता से	नाम पक्ष में दर्शाएंगे	देनदारों में से घटा कर दर्शायेंगे
11. देनदारों को छूट के लिये प्रावधान	लाभ-हानि खाता नाम देनदारों को छूट हेतु प्रावधान खाता से	लाभ–हानि खाते के नाम पक्ष में दर्शाएंगे	देनदारों में से घटाकर
12. प्रबन्धक का कमीशन	लाभ-हानि खाता नाम प्रबन्धक कमीशन से	लाभ–हानि खाते के नाम पक्ष में दर्शाएंग	देयता पक्ष में
13. असामान्य हानि	लाभ-हानि खाता नाम असामान्य हानि से	लाभ–हानि खाते के नाम पक्ष में दर्शाएंग	संबंधित परिसंपत्ति में से घटाकर
14. स्वामी द्वारा माल का आहरण	आहरण खाता नाम क्रय खाते से	क्रय में से घटाकर	पूँजी में से घटाकर
15. वस्तुओं का मुफ्त नमूना वितरण	विज्ञापन खाता नाम क्रय खाते से	क्रय में से घटाकर	स्कंध में से घटाकर

पाठगत प्रश्न 18.4

बताइए कि निम्नलिखित कथन सही अथवा गलत हैं :

i. स्वामी ने व्यवसाय के कुछ रोकड़ तथा माल आहरण के रूप में निकाले।
ii. यदि स्वामी माल का आहरण करता है तो इसे क्रय में से घटाया जाएगा।
iii. आहरण एक सम्पत्ति है।
iv. माल का सैंपल के रूप में मुफ्त वितरण व्यवसाय के लिए विज्ञापन है।
v. माल के सैंपल के रूप में मुफ्त वितरण को व्यापारिक खाते के नाम की तरफ लिखा जाता है।

आपने क्या सीखा

- समायोजन का लेखा करना आवश्यक है क्योंकि तभी आय विवरण एवं स्थिति विवरण सही लाभ/हानि तथा वित्तीय स्थिति दिखा पायेंगे।
- आय एवं व्यय की कुछ मदें ऐसी हो सकती है जो उस लेखा वर्ष से सम्बन्धित नहीं है जिस वर्ष के वित्तीय विवरण तैयार किये जा रहे हैं। इन्हें सम्मिलित नहीं करना है। इन्हें पूर्वदत्त मदें कहते हैं।
- आय एवं व्यय की कुछ मदें हो सकती है जो लेखा करने से रह गई हैं तथा जिनका लेखा किया जाना है इन्हें अदत्त व्यय अथवा उपार्जित आय कहते हैं।
- अन्य महत्त्वपूर्ण समायोजन जिन्हें किया जाना है वह है अन्तिम स्टॉक स्थाई सम्पत्तियों पर अवक्षयण, पूँजी पर ब्याज एवं आहरण पर ब्याज।

टिप्पणी

- अतिरिक्त अप्राप्य ऋण तथा देनदारों पर अप्राप्य एवं संदिग्ध ऋण के लिये प्रावधान भी हो सकता है।
- अतिरिक्त अप्राप्य ऋण वह ऋण है जिनकी वसूली सम्भव नहीं है तथा यह उन अप्राप्य ऋणों के अतिरिक्त है जो तलपट में दिखाए जा चुके हैं।
- अप्राप्य एवं संदिग्ध ऋणों के लिए प्रावधान–देनदारों से भविष्य में प्राप्य उन भुगतानों के लिये किया जाता है जिनकी वसूली की कोई सम्भावना नहीं दिखाई देती। इनका प्रावधान पुराने अनुभव के आधार पर किया जाता है।
- देनदारों पर छूट के प्रावधान की प्रक्रिया, संदिग्ध ऋणों के लिए प्रावधान के समान है। छूट पर संभावित राशि को लाभ–हानि खाते के नाम में लिखा जाता है तथा इसे स्थिति विवरण में देनदारों में घटा दिया जाता है।
- यदि मैनेजर को कमीशन पूर्व लाभ पर कमीशन दिया जाना है तो सूत्र होगा :

$$\text{शुद्ध लाभ} \times \frac{\text{कमीशन का प्रतिशत}}{100}$$

- यदि मैनेजर को कमीशन लाभ में कमीशन को घटा कर आई राशि पर दिया जाना है तो सूत्र होगा :

$$\text{शुद्ध लाभ} \times \frac{\text{कमीशन का प्रतिशत}}{(100 + \text{कमीशन का प्रतिशत})}$$

- असामान्य हानि का कारण है आग लगना, भूकम्प अथवा दुर्घटना। यह फर्म की स्थाई सम्पत्तियों को नष्ट कर सकती हैं। ऐसा होने पर सम्पत्ति खाते को व्यापार खाते के जमा में तथा लाभ–हानि खाते के नाम में लिखेंगे।
- व्यवसाय स्वामी द्वारा वस्तुओं का आहरण को व्यापार खाते के नाम में क्रय खाते से घटाया जाता है तथा स्थिति विवरण में पूँजी खाते में से घटाया जाता है।
- वस्तुओं के मुफ्त नमूने के रूप में बांटने पर उनको क्रय में से घटाया जाता है और लाभ–हानि खाते के नाम में विज्ञापन के रूप में दर्शाया जाता है।

पाठान्त प्रश्न

1. निम्न प्रश्नों का संक्षेप में उत्तर दीजिए:

   (क) समायोजन क्यों किये जाते हैं?

   (ख) अदत्त व्यय देयताएं क्यों मानी जाती है?

   (ग) उपार्जित आय एवं अनुपार्जित आय में क्या अन्तर है?

टिप्पणी

2. निम्न समायोजनों की रोजनामचा प्रविष्टि कीजिए।

   i. अदत्त मजदूरी

   ii. फर्नीचर पर अवक्षयण

   iii. निवेश पर उपार्जित ब्याज जिसका भुगतान प्राप्त नहीं हुआ है

   iv. बीमा प्रीमियम का अग्रिम भुगतान

3. संदिग्ध ऋण के लिए संचय की व्यवस्था क्यों की जाती है?

4. मै. वी.बी. फर्टीलाइजर के तलपट से 31 दिसम्बर 2013 को समाप्त वर्ष के लिए ब्यापार खाता एवं लाभ हानि खाता तैयार कीजिए तथा इसी तिथि को स्थिति विवरण बनाइए। समायोजनों की रोजनामचा प्रविष्टि भी कीजिए।

विवरण	*नाम शेष* ₹	*विवरण*	*जमा शेष* ₹
स्टॉक (1.1.2013)	13,800	पूँजी	65,000
क्रय	52,000	देय विपत्र	18,000
मजदूरी	4,000	विक्रय	74,400
आंतरिक वापसी	2,400	वापसी बाह्य	1,500
भूमि एवं भवन	40,000	बट्टा	450
संयन्त्र एवं मशीन	24,500	लेनदार	6,500
प्राप्य विपत्र	12,000	ब्याज	600
देनदार	5,500	अप्राप्य ऋण के	
हस्तस्थ रोकड़ एवं बैंक	8,750	लिए प्रावधान	250
में रोकड़		ऋण	8,000
किराया (कार्यालय)	2,200	कमीशन	700
अप्राप्य ऋण	400		
बीमा	1,500		
भाड़ा आगम	1,400		
ईंधन एवं बिजली	2,450		
फर्नीचर	4,500		
	1,75,400		1,75,400

समायोजन :

i. 31.12.2013 को स्टॉक ₹ 25,000 था।

ii. फर्नीचर पर 10% से एवं संयन्त्र तथा मशीन पर 20% से अवक्षयण लगाएं।

iii. प्रावधान करें; अदत्त मजदूरी के लिए ₹ 650 एवं अदत्त किराया ₹ 200 पूर्वदत्त बीमा ₹ 300 है।

टिप्पणी

iv. अतिरिक्त अप्राप्य ऋण ₹ 100, देनदारों पर अप्राप्य ऋण एवं संदिग्ध ऋण के लिये 5% का प्रावधान करें।

v. पूँजी पर 6% से ब्याज देना है।

5. 1 अप्रैल 2013 को अप्राप्य ऋण संचय खाता का शेष ₹ 3,200 खाता बही के अनुसार अप्राप्य ऋण का शेष ₹ 2,100 था। देनदार ₹ 7,000 थे। खाता बही को बंद करने के बाद यह पाया गया कि डूबत ऋण ₹ 800 थे। देनदारों पर 6% की दर से संदिग्ध ऋण का प्रावधान किये जाने का निर्णय लिया गया।

रोजनामचे में प्रविष्टि कीजिए तथा इन मदों को लाभ हानि खाता तथा स्थिति विवरण में दिखाइए।

6. प्रणया के तलपट से 31 दिसम्बर, 2014 को व्यापार खाता एवं लाभ हानि खाता तैयार कीजिए तथा इसी तिथि को समायोजन के पश्चात् स्थिति विवरण बनाइए। समायोजनों के लिए रोजनामचा में प्रविष्टि भी कीजिए।

तलपट

31.12.2014 को

खाते का नाम	*नाम शेष (₹)*	*जमा शेष (₹)*
प्रणया का पूँजी खाता		1,00,000
आहरण	24,000	
संयन्त्र एवं मशीन	45,000	
स्टाक (1 जनवरी, 2014)	15,000	
क्रय	85,000	
वापसी आंतरिक	5,000	
विविध देनदार	24,600	
भाड़ा एवं शुल्क	2,000	
भाड़ा बाह्य	1,600	
किराया, शुल्क एवं कर	3,800	
विविध लेनदार	—	22,000
डाक व्यय एवं कुरीयर व्यय	1,800	—
विक्रय	—	1,35,000
अप्राप्य ऋण के लिये प्रावधान	—	600
बट्टा	—	800
बीमा प्रीमियम	900	
मजदूरी	23,000	

टिप्पणी

हस्तस्थ रोकड़	6,200	
बैंक में रोकड़	20,500	
	2,58,400	2,58,400

समायोजन :

i. 31 दिसम्बर 2014 को स्टॉक ₹ 24,000 था।

ii. ₹ 600 डूबत ऋण के लिए अपलिखित कीजिए।

iii. विविध देनदारों पर 5% से संदिग्ध ऋणों के लिए प्रावधान करना है।

iv. संयन्त्र एवं मशीन पर 20% से अवक्षयण लगाना है। 1 जुलाई 2014 को ₹1,500 की मशीन का क्रय किया गया।

v. अदत्त मजदूरी ₹ 1500 तथा पूर्वदत्त बीमा ₹ 250 है

7. चिन्मय अग्रवाल की लेखा पुस्तकों से 31 मार्च, 2014 को निम्न शेष लिये गये।

विवरण	*₹*	*विवरण*	*₹*
चिन्मय की पूँजी	60,000	स्टॉक (1.4.2013)	44,200
फर्नीचर एवं फिक्सचर	5,000	देनदार	36,000
बैंक अधिविकर्ष	8,400	किराया प्राप्त	2,000
लेनदार	27,600	क्रय	2,20,000
व्यापार परिसर	50,000	विक्रय	3,00,000
बट्टा (नाम)	3,200	विक्रय वापसी	4,000
कर एवं बीमा	4,000	देय विपत्र	10,000
वेतन	20,000		
कमीशन (जमा)	2,000		
भाड़ा आन्तरिक	3,600		
डूबत ऋण	1,600		
मोटर वाहन	14,400		
निवेश	4,000		

निम्न समायोजन करने हैं :

(i) 31 मार्च, 2014 को स्टॉक ₹ 35,000 था।

(ii) अवक्षयण लगाना है:

व्यवसाय परिसर ₹ 800

फर्नीचर एवं फिक्सचर ₹ 500

मोटर वाहन 10% वार्षिक।

(iii) बैंक अधिविकर्ष पर ब्याज ₹ 150 था।

(iv) पूँजी पर ब्याज 6% वार्षिक था।

(v) लेनदारों पर संदिग्ध ऋणों के लिये 5% का प्रावधान करें।

(vi) ₹ 500 बीमा के अगले वर्ष ले जाने हैं।

31 मार्च, 2014 को समाप्त वर्ष के लिए व्यापार खाता एवं लाभ हानि खाता बनाइए तथा इसी तिथि को स्थिति विवरण तैयार कीजिए।

8. निम्न समायोजनों के लिए रोजनामचा में प्रविष्टि कीजिए:

   i. वर्ष में ₹ 12,000 के कुल प्राप्त कमीशन का 1/3 भाग अगले वर्ष के लिए है।

   ii. ₹ 8,000 का बीमा प्रीमियम का भुगतान वर्ष समाप्ति 30 जून के लिए किया गया है। खाते प्रति वर्ष 31 मार्च को बन्द किये जाते हैं।

   iii. वर्ष में आहरण पर ब्याज ₹ 450 लगाया गया।

9. उदाहरण देकर निम्न समायोजनों को समझाइए :

   i. देनदारों पर छूट के लिए प्रावधान

   ii. मैनेजर का कमीशन

10. असामान्य हानि का क्या अर्थ है? उदाहरण देकर इसके लेखांकन को समझाइए।

11. व्यवसाय स्वामी द्वारा वस्तुओं के आहरण तथा वस्तुओं के मुफ्त नमूना वितरण के लेखांकन को समझाइए।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

18.1 (i) लाभ, हानि (ii) लाभ अथवा हानि, वित्तीय स्थिति
(iii) सम्मिलित नहीं करना है (iv) लेखा करना है

18.2 (i) अदत्त व्यय (ii) पूर्वदत्त व्यय
(iii) उपार्जित आय (iv) अग्रिम प्राप्त आय

18.3 I. (i) डूबत एवं संदिग्ध ऋण के लिये प्रावधान
(ii) ह्रास/अवक्षयण (iii) डूबत ऋण (iv) अंतिम स्टॉक

II. (i) पूँजी खाता से (ii) अदत्त मजदूरी खाता से
(iii) बीमा प्रीमियम से (iv) कमीशन की अग्रिम प्राप्ति से

III. (i) असत्य (ii) सत्य (iii) असत्य (iv) असत्य (v) सत्य

IV. (i) नाम (ii) देयता

18.4 (i) सत्य (ii) सत्य (iii) असत्य (iv) सत्य (v) असत्य

टिप्पणी

पाठांत प्रश्नों के उत्तर

4. सकल लाभ ₹ 24,200, शुद्ध लाभ ₹ 12,580, स्थिति विवरण का योग ₹ 1,14,830

6. सकल लाभ ₹ 27,500, शुद्ध लाभ ₹ 10,400, स्थिति विवरण का योग ₹ 1,09,900

7. सकल लाभ ₹ 63,200, शुद्ध लाभ ₹ 30,610, स्थिति विवरण का कुल योग ₹ 1,40,360

क्रियाकलाप

कम से कम चार व्यावसायिक इकाइयों के वित्तीय विवरणों का विश्लेषण करें तथा स्थाई सम्पत्तियों पर वे अवक्षयण किस दर से लगा रहे हैं तथा संदिग्ध ऋणों के लिए वह प्रावधान किस दर से कर रहे हैं इसको लिखें तथा उनमें पाये जाने वाले अन्तर के कारणों का पता लगाएं।

क्र.सं.	*व्यावसायिक फर्म का नाम*	*अवक्षयण की दर*	*अन्तर के कारण*